‘‘जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता के आज के बदलते — स्वरूप में शिक्षा के परिपेक्ष्य में अध्ययन’’

श्री.जगदिश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विद्यापीठ, राजस्थान

शिक्षण—शास्त्र पी.एच.डी. संशोधन सारांश का प्रारूप

जे.जे.टी.यु. विद्यापीठ — झुनझुन

संशोधिका — द्वारा :
श्रीमती रेखा शर्मा
रजिस्टर क्रमांक :— १०७११४१३

मार्गदर्शक
श्रीमान डॉ.माधव रा. गवई
(शिक्षण—शास्त्र के दार्शनिकता)

शिक्षण—शास्त्र विभाग (हिन्दी)
श्री. जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विद्यापीठ,
झूनझून, राजस्थान — ३३३००१

सन् २०११—१२

‘‘जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता के आज के बदलते – स्वरूप में शिक्षा के परिपेक्ष्य में अध्ययन’’

अनुक्रमणिका

प्रकरण क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
१	प्रस्तावना	३—१४
२	अनुसंधान कीं आवश्यकता / महत्व	१४—१५
३	अनुसंधान के उद्देश्य	१५—१६
४	अनुसंधान की परिकल्पना / गृहितके	१६
५	अनुसंधान की कार्यवाही / नियोजन	१६—१७
६	अनुसंधान के साधन — तंत्र	१८
७	अर्थ—निर्वेचन वर्गीकरण का नमूना	१९—२२
८	संशोधन की मर्यादा / व्याप्ती	२३
९	संशोधन के प्रमुख — निष्कर्ष	२३—२४
१०	संशोधन से संबंधित संदर्भ ग्रंथ — सूची	२५

I. प्रस्तावना (Introduction) :- ‘‘जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता के आज के बदलते — स्वरूप में शिक्षा के परिपेक्ष्य में अध्ययन’’

आज का युग संचार का युग हैं । जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता का हर जगह बोल बाला हैं । समाचार — पत्रों, पत्रिकायों रेड़ियो, टी.व्ही.चॅनेलो की बाढ़ से संचार की महत्व दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही हैं । इंसान चाहे किसी भी भाषा में अध्ययन करे, मिड़िया में उसी का बोल बाला हैं । जिसका बोलने व लिखने का अंदाज बढ़िया हैं । जिसके पास सूचनाओं का भंडार हो ।

सुप्रसिध्द विश्व विद्यालयों व महाविद्यायों कॉलेज में जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता से संबधित अनेक कोर्स करवाये जा रहे हैं ।

१. **परिभाषा :— जनसंचार (Mass Communication) :—** जब संचार की बात चलती हैं । तो नि:संदेह जनसंचार की धारणा आज के युग में दिन ब दिन लोकप्रियता हासिल कर रहा हैं। साधारण से शब्दों मे मिड़िया के किसी भी चॅनेलो के द्वारा अपने संदेश की भौगोलिक दृष्टि से दूर—देर तक फैले हुये लोगो तक पहुॅचाना जनसंचार कहलाता हैं । यह मिड़िया का कोई भी चॅनेल हो सकता हैं । चाहे वह जनसंचार माध्यम जैसे समाचार पत्र हो, पत्रिका हो, रेड़ियों, टी.व्ही., सिनेमा हो या इंटरनेट या फिर कोई अनुरूप माध्यम ।

“It is a Process of delivering information, ideas and attitude to a large and diversified audience scattered over a large geographical are through the use of media developed for that purpose.

२. **जनसंचार का स्वरूप (Nature of Mass Communication) :—** जनसंचार के स्वरूप के विभिन्न पहलू हैं।

१. जनता का स्वरूप (Nature of Audience)

२. संचार का स्वरूप का अनुभव (Nature of Communication Experience)

३. संचारक का स्वरूप (Nature of Communication)

४. जनसंचार में प्रयोग की जानेवाली तकनीकी का स्वरूप (Nature of Technology of Mass Communication) :- मास मिड़िया के विभिन्न रूपों का वर्णन करने से पहले हम मास मिड़िया के अर्थ पर चर्चा करते हैं।

मास मिड़िया वह तकनिक हैं । जिनके जरिये सूचना का आदान—प्रदान किया जाता हैं। व लोंगो का मनोरंजन किया जाता। शुरू से ही रेड़ियो, प्रेस, टी.व्ही. सिनेमा को मास—मिड़िया में शामिल किया जाता हैं । इसको (New Media) या (Interactive Media) कहा जाता हैं। क्योंकि इन तकनिकी में प्रतिक्रिया भागीदारी को पुरा महत्व दिया जाता हैं।

परिभाषा :— विल्बर श्रम के अनुसार ''मास मिड़िया वह संगठन हैं। जिनका उद्‌देश्य हैं। अनगिनत लोगों तक एक ही समय में उपयुक्त संदेश पहुॅचाना हैं।'' किताबों, मैगजिना, पैम्पलेट आदि को भी मास—मिड़िया में शामिल किया जाता हैं।

मास मिड़िया की सबसे प्रमुख विशेषता हैं। मास प्रोडक्यान व मास डिस्ट्रील्यूशन इससे तात्पर्य है कि पत्र पत्रिकायों को हजारों लाखों की संख्या में प्रकाशित किया जाना और भौगोलिक दृष्टि से दूर—दूर के इलाकों में वितरित किया जाता हैं ।

भारत में पारंपरिक मिड़िया आधुनिक मिड़िया से ज्यादा लोकप्रिय हैं । पारंपरिक मिड़िया लोगो के दिलो के ज्यादा करीब होता हैं। जिसमें लोंगो की भागीदारी को भी शामिल किया जाता हैं ।

जनसंचार के प्रमुख तत्व (Element of Mass Communication) :— जनसंचार प्रक्रिया के तत्व निम्न हैं ।

१. **संचारक (Sender) :—** संचार प्रक्रिया में वह एक संगठन होता हैं। जिसमें बहुत से व्यक्ति सुचनाओं को एकत्रित करते हैं और उन्हे लोंगो तक पहॅचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

२. **संदेश (Message):—** जनसंचार प्रक्रिया में संचारक द्वारा दिया गया संदेश पब्लिक अथवा सार्वजनिक होता हैं । कोई भी निजी संदेश संचारक द्वारा नही दिया जाता हैं । संदेश भी वही दिया जाता हैं । जो सामान्य जनता सूचित करता हैं । सबके लिये लाभदायक होता हैं ।

३. **चॅनेल (Channels) :—** जनसंचार प्रक्रिया में सदैव मिड़िया के चॅनेल का प्रयोग किया जाता हैं । जैसे — समाचार पत्र, पत्रिकायें, रेड़ियों, टी.व्ही. इंटरनेट इ. ये चॅनेल संदेश को भौगोलिक दृष्टि से दूर दूर तक बैठे लोंगो को पॅहुचाते हैं ।

४. **प्राप्तकर्ता (Receiver):—** संदेश को ग्रहण करने वाले लोग (Heterogenous) होते हैं । अर्थात वे एक दुसरे को स्वरूप, अनुभवों, आदतों रूचियों की दृष्टि से भिन्न होते हैं । और प्राप्तकर्ता भौगोलिक दृष्टि से भी दूर के इलाकों मे फैले होते हैं ।

५. **प्रतिक्रिया (Feed Back) :—** जनसंचार प्रक्रिया के किसी भी पड़ाव यह शोर शराबा कई तरह का हो सकता हैं । जहॉ लोगों (Mob.) अप्रत्यक्ष प्रतिक्रिया द्वारा दी जाती हैं । कई बार तो प्रतिक्रिया दी ही नहीं जाती ।

६. **शोर — शराबा :—** जनसंचार प्रक्रिया में किसी भी तरह का आवाज या शोर—शराबा पुरी प्रक्रिया में बाधा डाल

सकता हैं । और यह हर तरह का होता हैं । जैसे १. सैम्पटिक (Sematic) २. टैकनिकल (Technical) ३. इन्वायरमेंटल (Enviermental)

इस तरह यह सब संचार के प्रमुख तत्व हैं ।

आधुनिक मास मिड़िया के विभिन्न रूप इस प्रकार हैं । उदाहरण –

जनसंचार

प्रिंट मिडिया
१) अखबार
२)पत्रिका, न्युजलेटरस
३)पुस्तके और किताबे
४)मैगजिन्स पत्रिकायें
५)विज्ञापन जाहिरात इत्यादी

इलेक्ट्रोनिक मिडिया
टी.व्ही.
दूरदर्शन
रेडियो
संगणक
फिल्मे, सी.डी,
डि.व्ही.डी

जनसंचार आज २१वी शताब्दी में

इंटरनेट

मोबाईल

जनसंचार माध्यम कई प्रकार के हैं। जैसे कि

१. **प्रिंट मिड़िया :–** इसे मे निम्नलिखीत जनसंचार के प्रकार आते हैं।

१) अखबार

२) पत्रिका, न्युजलेटरस

३) पुस्तके और किताबे

४) विज्ञापन, पत्रिका इत्यादी.....

२. **इलेक्ट्रोनिक मिडिया :—** इसे में निम्नलिखीत जनसंचार के प्रकार आते हैं।

१) टी.व्ही.

२) दूरदर्शन

३) रेडियो

४) संगणक

५) फिल्मे, सी.डी, डि.व्ही.डी इस के आलावा नव युग २१ वी शताब्दी में कुछ नये विज्ञान व तकनिकी विकसीत कर ली हैं जनसंचार माध्यम ने १) इंटरनेट व मोबाईल फोन का तेजी से शिक्षा के क्षेत्र में भी हो रहा हैं ।

१. **प्रिंटमिडिया (Print Media (Press) :-** प्रिंटमिडिया लोगों तक सूचनाएँ पहूचाने का सर्वोत्तम माध्यम हैं। समाचार पत्र सबसे पहले गुलबर्ग ने जर्मनी मे प्रिंटीग प्रक्रिया का अविष्कार किया २९ जनवरी १७८० James Augusts Hicky ने भारत का पहला समाचार पत्र शुरू किया जिसका नाम था, 'बंगाल गॅझेट' इसको 'हिक्की गॅझेट' भी कह कर भी पुकारा जाता हैं।

उस समय पर बहुत से समाचार पत्र लोकप्रिय हुये :—

१) मिरात—उल—अखबार राजाराम मोहन रॉय द्वारा प्रकाशित

२) बॉम्बे समाचार

३) समाचार दर्पण

४) अमृत बाजार पत्रिका

५) केसरी (लोकमान्य तिलका द्वारा प्रकाशित)

६) हरिजन (महात्मा गांधीजी द्वारा प्रकाशित)

७) नवजीवन (महात्मा गांधीजी द्वारा प्रकाशित)

गाधींजी, बाल गंगाधर तिलक उस समय के बेहतरीन पत्रकार थे और उन्होंने समाज की बुराईयों को समाप्त करने के लिए व प्रेस को स्वतंत्र करवाने के लिए अपना बहुमुल्य योगदान किया ।

आज के समय के लोकप्रिय समाचार पत्र हैं।

१) द ट्रिबियन

२) हिंदुस्तान टाइम्स

३) दैनिक जागरण

४) दैनिक भास्कर

५) अमर उजाला

६) पंजाब केसरी

७) अजीत इत्यादी

२. **इलेक्ट्रोनिक मिडिया (Electronic Media) :-** रेड़ियो, टी.व्ही. सिनेमा, किताबे, टेपरिकार्डस, सी.डी. संगणक इत्यादी ज्ञान व सूचना देने के सशक्त माध्यम है शिक्षण प्रक्रिया व जनसमुदाय में इत्यादी ।

२१ वी शताब्दी में इंटरनेट विज्ञान का अनोखा जनसंचार माध्यम बेहद प्रचलित (Internet) सर्वोत्तम माध्यम हैं । इंटरनेट की बदौलत ही आज पूरा विश्व मनुष्य की हथेली में समा गया हैं ।

जनसंचार नई तकनिकी (इंटरनेट) :— यह वस्तुत: एक कम्प्युटरीकृत नेटवर्किंग सेवा हैं । जिसको सूचना संचार के आधुनिकता तीव्रतम माध्यम के रूप में माना जाता हैं । इस सेवा को उपलब्ध कराने वाली कंपनी को इंटरनेट सर्विस प्रोवाईडर आई.एस.पी. के नाम से जाना जाता हैं । इंटरनेट सेवा से कई आई.एस.पी.जुडे हैं । और हर नेट उपभोक्ता कम्प्युटर को इसी के माध्यम से यह सुविधा मिलती हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र में इंटरेट द्वारा E-mail शिक्षक व प्रोफेसर पूरी कक्षा को इंटरनेट द्वारा कर संपर्क साथ सकते हैं । तथा वेब पैज मे एलेकिग द्वारा गृहकार्य ऑनलाईन द्वारा संदेश देकर साप्ताहिक प्रगती,

व ग्रेट देकर शिक्षा दे सकते हैं । इस तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी सहायक हो रहा हैं दिन प्रति दिन इस तरह

"Internet is Net work of Network with a universal addressing scheme all wing real time computer to computer, Local-Independent Communication and Information exchange."

Calberath (1997)

इन्टरनेट का शैक्षणिक उपयोग :— आज के सूचना एवं सम्प्रेषण आधारित समाज में इन्टनेट के अनेको अनेक उपयोग है। शिक्षा एवं प्रशिक्षण में इंटरनेट का उपयोग भी उनमें एक हैं।

ट्रेनट्रिन (Trentrin 1999) के अनुसार इंटरनेट के कई शैक्षणिक उपयोग को मुख्य रूपसे वर्गोमें विभक्त किया जा सकता हैं।

१) ज्ञान एवं कौशल्य को विकसित करना।

२) ज्ञान को नेटवर्किंग के माध्यम से उपलब्ध करना।

इंटरनेट :— प्रथम वर्ग में इंटरनेट विषय वस्तु केंद्रित हैं। जब की दूसरे वर्ग की इंटरनेट सुविधा केंद्रित हैं। दूसरे वर्ग में इंटरनेट व्यक्ती अध्ययनो एवं परियोजनाओ को सहायता प्रदान करता हैं।

इंटरनेट के शिक्षा में लाभ :— कुछ मुख्य प्रमुख लाभ हैं।

१) बहुत बडी संचया में जानकारी छात्रों के लिये उपलब्ध हो जाती हैं।?

२) ई—मेल के माध्यम से छात्र — छात्र, छात्र—अध्यापक एव छात्र विशेष के बीच की दुरियॉ समाप्त हो जाती हैं।

३) इंटरनेट सभी को अधिगम के समान अवसर प्रदान करता है।

४) इंटरनेट का प्रयोग एक प्रेरणादायक का भी कार्य करता हैं। क्योकि इसमें अनेक तरीको—ग्राफिक्स, टेक्सट एवं विडियो आदि के माध्यम से जानकारी मिलती हैं।

५) प्रत्येक बार इंटरनेट पर नई—नई जानकारी मिलती हैं। क्योकि इसमें अपडेट करने की सुविधा हैं।

६) यह (Coste effective) तकनिकि है। मुल्य पर प्रभावी ।

७) संसार के चारो तरफ के समाचार अपने साईटपर इंटरनेट छात्रों को उपलब्ध कराता हैं ।

८) जनसंचार माध्यम के साधन जैसे कि रेड़ियो, टी.व्ही., सी.डी. इंटरनेट द्वारा छात्रो को हर तरह कि जानकारी इन साधनो के माध्यम से शिक्षक दे सकता हैं क्योकि कभी कभी शिक्षक भी इन्की सहायता से ज्ञान देते हैं इसलिये यह जुमला बहुत प्रसिद्ध हैं । जनसंचार साधनों के लिये ''घंटो का काम मिनटो में हम करे चुटकी बजाते हुये सुबह हो या शाम''

९) इंटरनेट में ई—मेल के द्वारा सरकारी (पॉलिसी) व नई नीतियॉ विज्ञापन, कानून नियम युनिवसर्टी के विद्यालयों के सब कुछ घर बैठे छात्रो को संगणक पर उपलब्ध कराता हैं ।

१०) इंटरनेट के सुविधा से आज कल विद्यालय व युर्निवसिटी दाखिला पत्र, समय—सारणी, फी शुल्क के विषय में जानकारी संगणक के माध्यम से देते हैं । जो आसानी से छात्रो को घर पर ही मित्र जाती हैं ।

श्रव्य—दृश्य शिक्षण जनसंचार साधन का आज के परिपेक्ष्य में बदलते स्वरूप का महत्व :— वर्तमान शैक्षणिक उपक्रम में जनसंचार माध्यम के श्रव्य—दृश्य सामग्री अध्यधिक उपयोगी हैं । दूसरे कुछ महत्वपूर्ण उपयोग निम्नलिखित हैं । —

१) विभिन्न अमूर्त विचारों, प्रत्ययों एवं प्रक्रियाओ के स्पष्टीकरण में सहायक हैं ।

२) छात्रों में अभिवृत विकास तथा व्यवहार परिवर्तन में सहायक हैं ।

३) प्राय: अप्रात्य एवं कठिन प्रक्रियाओं, जैसे पौथों में भोजन निर्माण प्रक्रिया, घटनाओं, साधनों एवं समय गति तथा स्थान परिवर्तन को छात्रों के सम्मुख स्पष्ठ रूपसे प्रस्तुत करने में सहायक हैं ।

४) इनके द्वारा कम समय में छात्रों की अधिकतम तथात्मक ज्ञान प्रदान करनो तथा छात्रों द्वारा अधिक समय तक याद रखना संभव होता हैं ।

५) जनसंचार साधन के सामग्री के द्वारा समय की बचत होती हैं ।

६) प्राय: व्यायान विधी के विधी के उपभोग के कारण छात्र शब्दों के वाक्यजाल में उलझा रह जाता हैं । उसका ध्यान शिक्षण के विषय से भटके जाता हैं । और वह कक्षा में उपरचित रहते हुये भी कुछ नही सिख पाता । प्रभावशाली सीखने के लिये सीखनेवालों की मानसिक स्थिती अधिक महत्वपूर्ण हैं । जनसंचार तकनीकी में प्रयुक्त श्रव्य दृश्य सामग्री (Audio-visual Aides) छात्र का ध्यान शिक्षण की और आकर्षित करती हैं । तथा छात्र की मानसिक क्रियाओ को उत्तेजित करती हैं ।

७) शिक्षण की नीरसता को समाप्त कर शिक्षण को रोचक बनाती हैं ।

८) ऐसे ऐसे विभिन्न विज्ञान विषय के प्रयोगों को जिनका कक्षा में प्रदर्शन खतरनाक होगा उन्के संकल्पनाओं व समीकरण को एज्युकाम द्वारा शिक्षा देने पर और अधिक स्पष्टीकरण छात्रगण के सम्मुख रखने पर सहायक होती हैं । उदाहरण के तौर पर जैसे परमाणु — विभाजन इत्यादी ।

९) ऐसे विभिन्न तत्य, जो कि इतिहास की वस्तु हो गये हैं । उन्के प्रदर्शन में सहायक हैं ।

१०) विवाद ग्रस्त विषयों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन में सहायक हैं ।

११) छात्रों को पर्यावरण एवं सामाजिक वातावरण के साथ प्रत्यक्ष अन्तक्रिया का अवसर प्रदान करती हैं ।

१२)शाब्दिक संदेशो के पुनर्वलीकरण में सहायक हैं ।

१३)शिक्षण गतिविधियों में छात्रों की रूची तथा ध्यान बनाये रखती हैं ।

१४)कम समय में अधिकतम छात्रों को सामान्य से अधिक ज्ञान देना संभव हैं ।

शैक्षिक साधन (Educational Audio-Visual)

दृश्य साधन Visual Means	श्रव्य साधन Audio Means	दृश्य श्रव्य Audio Visual
१. चित्र, शब्द पट्टे	रेड़ियो	टी.व्ही.
२. चित्रपट चार्ट	टेपरिकॉर्डर	विड़ियो
३. आलेख प्रतिकृती	टेलीफोन	इंटरनेट
४. सारणी, माड्ल्स	दूरदर्शन	कम्प्युटर
५. मानचित्र, ग्राफ, पोस्टर	ग्रामोफोन	शैक्षिक सिनेमा
६. डाइग्राम, फ्लैश कार्ड		ओ.एच.पी.
७. ग्राफिक्स, पिक्चर इत्यादी		एच.सी.डी.
८.		एपिडोस्केपिया
९.		विड़ियों –क्रान्फेसिंग
१०.		फिल्म, स्लाईट
११.		फिल्म–स्ट्रिप इत्यादी

२१ वी शताब्दी में जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता का महत्व :–
एक नये विश्व समुदाय के निर्माण हेतु जनसंचार एवं पत्रकारिता की भूमिका अहम हैं । पत्रकारिता न केवल जनभावना की अभिव्यक्ती हैं । बल्कि वह चौथा खम्भा हैं । जनता का सजग प्रहरी भी हैं

जनसंचार माध्यम में पत्रकारिता लैटिन के ‘diurnal is’ शब्द से मिल कर बना हैं । जिसका अर्थ हैं । दैनिक या ‘daily’

पत्रकारिता कलम की कला :— पत्रकारिता को चाहे हम व्यसाय कहे; वास्तव में यह एक लिखने की कला हैं । एक पत्रकार के लिये पत्रकारिता के नियम, प्रक्रियाओं और विभिन्न तकनीकी की जानकारी आवश्यक हैं प्रतिदिन सुबह लाखों करोंड़ो पाठको तक पत्रकार की कलम ही पहुॅचती हैं । कलम की कला लेखनी ही का कमाल हैं जो पत्र—पत्रिकाओं के लिये पाठक वर्ग बनाता हैं । इसलिये पत्रकारिता की कला को जिवित रखने के लिये कुछ लेखन के पक्ष मजबूत होने चाहिये जैसे कि :—

१. अच्छे लेखन का रहस्य और पाठक और चिन्तक होना ।
२. अभ्यास और आत्मविश्वास का मजबूत होना ।
३. लेखन का योजनाबद्ध ढॉचा लिखित होना ।
४. रिर्पोटिंग की भाषा परिमार्जित व सुनियोजित होना ।
५. छोटे शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदो का प्रयोग करना ।
६. लोक प्रचलित सहज शब्दावली का प्रयोग करना ।
७. सीधा स्पष्ठ लेखन का होना ।
८. कम शब्दो का प्रयोग करना ।
९. पुनपर्ठन और पुनलेखन करना ।
१०. खोजी पत्रकारिता व स्टिंग आप्रेरेशन का प्रकाशन करना उदाहरण के तौर पर :—
   अ)११ अगस्त को बांग्लादेशीयो का आजाद मैदान मुंबई में धरना प्रर्दशन व दंगे फसाद का प्रसारण
   ब) २६/११ मुंबई ब्लास्ट
   क) गुजरात धार्मिक दंगे फंसाद इत्यादी
११. येलो जर्नलिजम (yellow journalism) पर रोक व कडे कदमों का अनुसरण करना ।

पत्रकारिता के गिरते मूल्यों को बचाने व संभालते के लिये पत्र जगत में आज ऐसे पत्रकारों की नितांत आवश्यकता हैं जिनके पास

सरस्वती की पूँजी हो, ईमानदारी, लग्न, जिंदादिली व ‘‘सत्यम, शिवम्, सुंन्दरम् का’’ उद्घोष कर गिरते मूल्यों की पुन: सुरक्षित कर भारत को एक नई दिशा राष्ट्रीय मंच पर नही बल्कि अंतराष्ट्रीय मंच पर भा सही राह मिले।

उपसंहार (निष्कर्ष) :— जनसंचार माध्यम के साधन जैसे टी.व्ही, रेडियो, इंटरनेट, संगणक, प्रेस पर सब बहुत ही सशक्त प्रभावशाली माध्यम हैं जो एक ही समय में एक साथ लाखों करोडों लोगों के साथ संपर्क साद अपनी बात कुछही क्षणों में कह सकता हैं । आज कल स्वतंत्र देश में बडे बडे लिडर, राजनैजिज्ञ, प्रशासन, आला अफसर, चुनाव या फिर जनमत हासिल करने के लिये इन सब प्रक्षेपित साधनों का उपयोग कर अपने हक में वोट मनवा लेतें हैं ।

इसी तरह पत्रकारिता द्वारा अखबार, न्युज चॅनेल, टी.व्ही., संगणक द्वारा ताजी घटनाओं का लाभ तुरंत मिल जाता हैं । इन सब माध्यमों द्वारा संसार सिमट कर चारो तरफ की घटना उपक्रम को इन माध्यमों द्वारा प्रसारित करती हैं । और इंटरनेट संगणक ने तो जादू का वाक्जाल तैयार कर सूचनाओं तकनीकी में चार चॉद लगा दिये हैं ।

शिक्षक गण इन साधनों का उपयोग कर पाठयक्रम को रोचकता प्रदान कर रहे हैं । व प्रभावशाली माध्यम सशक्त बना रहे हैं ।

II. अनुसंधान की आवश्यकता / महत्व (Need and Importance of the studies) :—

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान का एक विशेष जैसी प्रक्रियाओं की पालन कर विशद वर्णन का लेख जोखा व अपने विषय से सब दूषित नई बात, ज्ञान अर्जित करने के लिये शोधकार्य की आवश्यकता होती हैं । तथा कुछ निम्न मुद्दो का ध्यान में रख शोध

कार्य की महत्व व आवश्यकताओं की पूर्ती करनी चाहिये जो निम्नलिखित हैं ।

१. इससे पहले शोधकार्य की आवश्यकता नुसार देखने पर पुनरावृत्ती की घटना, योग्य विषय का चयन, पुन: निरीक्षण, प्रारूप सामग्री संकलन कर योग्य विषय को चुनने में मागदर्शन करना ।

२. चुने गये शोध कार्य के विषय से संबंधित पध्दती व तंत्र की जानकारी मिलती हैं ।

३. सर्तक विचारो की कल्पना का ज्ञान होता हैं ।

४. नये सिंदूधात, कुछ मौलिक विचार, स्थापनाये तथा परिकल्पना का ज्ञान मिलना ।

५. संशोधन के विषय में सम्यक दृष्टीकोण के विकास में मद्द मिलती हैं ।

६. आधार सामग्री व निष्कर्ष इस विषय की तुलनात्मक जानकारी मिलती हैं ।

७. वर्तमान साहित्य का अध्ययन में शोधविषय चुनने में आवश्यकता मिलती हैं । इत्यादी

८. शोध कार्य द्वारा ज्ञान के क्षेत्र में विकासा व स्वय: को गुणों में शोध प्रवृत्तीयों का विकास समुचित दिशा में करना ।

III. अनुसंधान का उद्देश्य (Objective of the studies) :-

१. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता का शिक्षा से बदलते हुये स्वरूपका अध्ययन करना ।

२. जनसंचार माध्यम का आज के परिपेश्य में शोध लेना ।

३. जनसंचार माध्यम बदलते हुये शिक्षा का अनुग्रहण करना ।

४. जनसंचार माध्यम के दृश्य श्रव्य साधन अर्थात नई नई शैक्षणिक साधन के उपयोग में वर्तमान के बदलते हुये स्वरूप का इष्ट होने वाले परिणाम छात्रों पर अध्ययन ।

५. जनसंचार माध्यम के इन साधनों का नकारात्मक परिणाम का एक अभ्यास क्रम ।

६. जनसंचार एवं पत्रकारिता शिक्षा का समन्वय । जोड़ करना ।

७. उचित उपायों एंव सरचता के साथ जनसंख्या एंव पत्रकारिता का शिक्षा से जोडते हुये अमल करना ।

८. विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष सकारात्मक परिणाम का अभ्यास करना ।

IV. संशोधन के परिकल्पना (गृहतिके) Hypothies of the Study :— प्रस्तुत संशोधन की परिकल्पना निम्नलिखित हैं ।

१. मास—मिड़िया अर्थात जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता का आज के परिपेक्ष्य में शिक्षा से बदलते हुये स्वरूप का अध्ययन करना ।

२. शिक्षा के परिपेक्ष्य में जनसंचार साधन एवं पत्रकारिता का सह संबंध दर्शाना ।

३. मास—मिड़िया और पत्रकारों के व्यसाय जीवन से संबंधित शिक्षा — ग्रहण करना ।

४. मास—मिड़िया के छात्रों के व्यवहार पर सकारात्मक । इष्ट परिणाम का अध्ययन करना ।

५. जनसंचार साधनों एवं शिक्षा के अध्ययन का नई शैक्षिक का छात्रों पर अनिष्ठ । नकारात्मक परिणाम होता हैं । इस दृष्टीकोन से अध्ययन करना ।

६. जनसंचार साधनों का अध्ययन अध्यापन का चिकित्सक निरचित प्रामाणिक परिणाम होता हैं । इस बाात का अध्ययन करना ।

V. समस्या का नियोजन कार्यवाही (Work plan and Methodology) :-

इस शोध कार्य के लिये मैने सर्वेक्षण पध्दती का प्रयोग किया तथा मुंबई शहर जो महाराष्ट्र राज्य के अंतरंगर्त आता हैं । जिसके तहत

१) मुंबई शहर के पवई स्थित हिरानंदानी स्टेट बी.एम.एम.शेट्टी इंटरनेशनल मास मिड़िया के सिनियर कक्षा के ५० विद्यार्थीयों को न्याय दर्शके लिये चुना तथा प्रश्नावली के माध्यम से संख्याकी द्वारा निष्कर्ष निकाला ।

२) महाराष्ट्र राज्य के मुंबई शहर के मुलुंड क्षेत्र वाणी विद्यालय जूनियर कॉलेज सायन्स / कॉर्मस ५० छात्रों को न्याय दर्श के लिये चना तथा प्रश्नावली माध्यम से संख्यिकी ढंग से हल कर निष्कर्ष निकाला ।

३) १० दस पत्रकारों को चुनकर दैनिक भास्कर अखबार कार्यालय मुंबई स्थित न्यायदर्श चुन सांख्यिकी ढंग से हल किया ।

जिसकी सारणी निम्न प्रकार से हैं ।

	कॉलेज का नाम	**विद्याथियों की न्यायदर्श संख्या**
१.	वाणी विद्यालय जूनियर साइंस–कामर्स कॉलेज मुलुंड (८०) अंग्रेजी माध्यम	५० छात्र संख्या
२.	एस.एम. शेट्टी इंटरनेशनल बी.एम.एम. कॉलेज हिरानंदानी पवई अंग्रेजी (माध्यम)	५० छात्र संख्या
	कुल योग	**१०० छात्र संख्या**

पत्रकार दैनिक भास्कर (हिन्दी)

	अखबार का नाम	**पत्रकारों की संख्या**
१.	(दैनिक भास्कर) हिन्दी	१०
	कुल योग	**१०**

VI. संशोधन के साधन तंत्र (Tools used in Research Work) :- प्रस्तुत शोध कार्य के लिये विषय चुनकर उसके संबंध में सारी तत्यों का संकलन व सूचनाओं को एकत्रित करने के अथक प्रयास विभिन्न संशोधन साधन तंत्रों के द्वारा कार्य किया, जिसके अंतरंगर्त संशोधन साधन तंत्र के प्रश्नावली, शेडयूल जॉच—पड़ताल, सूची पद निश्चय श्रेणी, गुंणाक पत्रिका, मानस—शास्त्रीय कसौटियॉ, निरीक्षण, मुलाकात (इंटरव्यूह) लेखन साधन, अनुसूची, गुणांक सूची, मनोवृत्ती मापन, प्रक्षेपण शील तंत्र, समाजिमती तंत्र, प्रतिसाद, प्रतिसादक प्रश्न, निरीक्षण पत्रक, बुद्धी मापन कसौटी, अभिरूची शोधिक, व्यक्तीमत्व मापन, अभियोग्यता कसौटियॉ, इन साधनों का आवश्यकतानुसार उपयुकत साधनों का योजनाबध्द तरीके से चयनित किया ।

प्रस्तुत संशोधन में संशोधिका ने उपयुक्त साधनों मे से शोध कार्य के लिये चुना जो निम्न प्रकार से हैं ।

VII. संकलन विश्लेष्ण और अर्थ निर्वचन का प्रश्नावली वर्गीकरण का नमूना (Sample) :- छात्रों के प्रश्नावली वर्गीकरण नमुना अ

१. नई नई तकनीकी देखने में सुनने में छात्रों को कितनी % उत्सुकता लाती हैं ?

कोष्ठक १

क्र.	**प्रतिसाद विधान**	**प्रतिसादक**		**सेकड़ों मे ऑकडे**
		ज्यू. कॉलेज	**बी.एम.एम.**	
अ)	हमेशा	२०	४५	६५%
ब)	रोज	३०	०४	३४%
क)	कभी नही	००	०१	०१%
	कुल योग	**५०**	**५०**	**१००%**

निरीक्षण :— उपयुक्ती कोष्टक द्वारा निरीक्षण करने में यह तत्य सामने आया हैं कि जनसंचार माध्यम की नई नई तकनीकी छात्रों में ६५% उत्सुकता लाती हुये प्रयुक्त होती हैं परंतु ३४% छात्रों ने नई तकनीकी में उत्सुकता दर्शायी हैं । रोज तथा १% छात्रों ने इन तकनीकी की उत्सुकता की नही बताया हैं ।

अन्वयार्थ :— नई नई तकनीकी जनसंचार माध्यम के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र मे हमेशा उत्सुकता प्रदान करती हैं । इस बात की अधिकतर सहमती मिली हैं ।

निष्कर्ष :— छात्र छात्राओं के लिये नई नई तकनीकी जनसंचार माध्यम द्वारा शिक्षा के परिपेक्ष्य क्षेत्र में अधिक उत्सुकता प्रदान करती हैं यह मत माननेवाले ज्यादा विद्यार्थि गण हैं । इस कोष्टक द्वारा यह निष्कर्ष निकला हैं ।

आलेख १

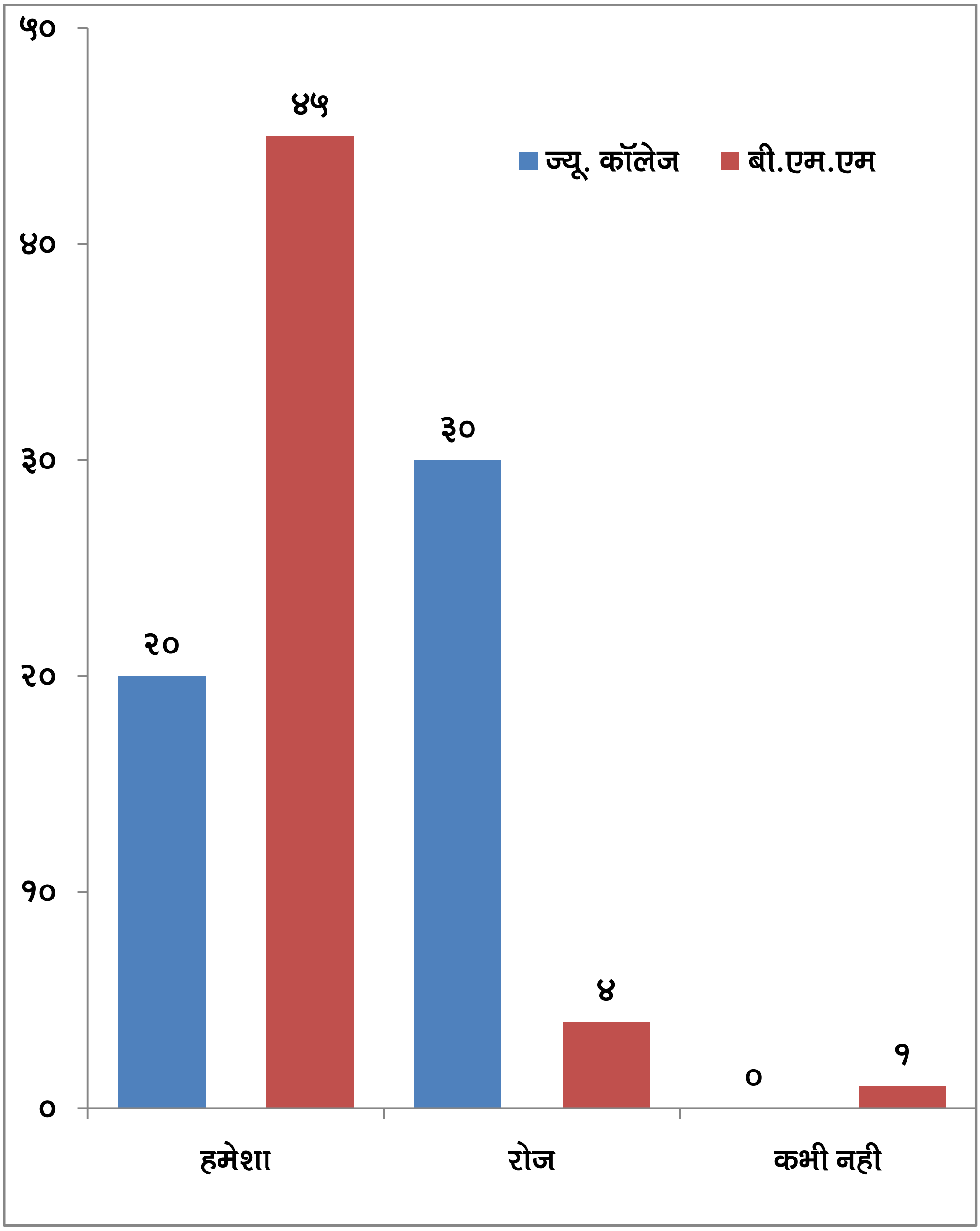

VII Sample :- पत्रकारों के प्रश्नावली वर्गीकरण का नमूना ब)

१. पत्रकार को लिगल, सोशल, प्रोफेशनल जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिये ? क्यों ?

कोष्टक १

क्र.	**प्रतिसाद**	**प्रतिसादक**	% **का प्रमाण**
अ)	१००%	०९	०९%
ब)	५०%	०१	०१%
क)	२५%	—	—
	कुल योग	**१०**	**१०%**

निरीक्षण :— प्रस्तुत कोष्टक द्वारा यह निर्देशित होता हैं कि पत्रकारो को शत प्रतिशत १००% अर्थात ९% पत्रकारोंने अधिक संख्या में अपने मत मे कहा हैं कि हर हाल में पत्रकारो को लिगल, सोशल, प्रोफेशनल, जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिये । सिर्फ १% पत्रकार सिर्फ ५०% ही इस बात को स्वीकारते हैं तथा २५% पत्रकारोंने शून्य प्रतिशत इस विधान को स्वीकारा हैं ।

अन्वयार्थ :— पत्रकारो को लिगल, सोशल, प्रोफेशनल जिम्मेदारियों का पालन करते हुये पत्रकारिता करनी चाहिये इस विधान को शत प्रतिशत संख्या में मत पत्रकारों ने दिये हैं ।

निष्कर्ष :— प्रस्तुत कोष्टक को निरीक्षण करने के पश्चात यह बात सामने आयी हैं कि पत्रकारिता के क्षेत्र में अपने पत्रकारिता करते समय शत प्रतिशत लिगल, सोशल, प्रोफेशनल जिम्मेदारियो का पालन करते हुये पत्रकारिता करनी चाहिये ऐसा सार्वधिक मत पत्रकारोंने अधिक संख्या मे दिये हैं ।

आलेख १

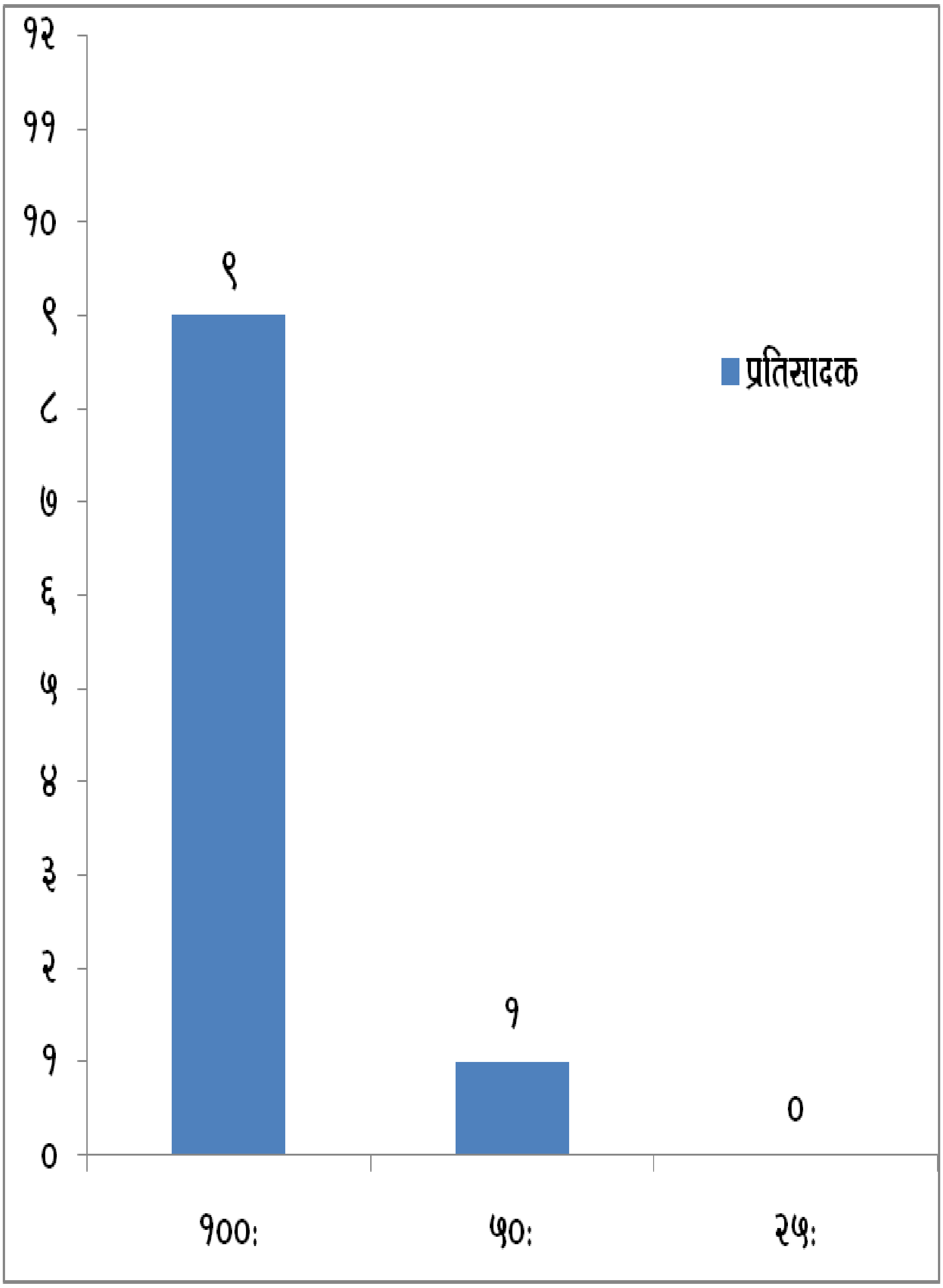

VIII संशोधन की मर्यादा / व्याप्ती (Scope and Limitation) :-

१. यह शोध कार्य की मर्यादा महाराष्ट्र राज्य के अंतरर्गत की गई हैं ।

२. यह शोध कार्य B.M.M. छात्रों को प्रश्नावली पध्दती द्वारा किया गया हैं ।

३. यह शोध कार्य विश्वविद्यालय, विद्यालय, कॉलेज के अंतरगर्त आता हैं ।

४. यह शोध छात्र छात्राओं दोनो पर लागू होती हैं ।

५. यह शोध कार्य जनसंचार से संबंधित कार्यालयों के लिये लागू किया जाता हैं ।

६. संपादन, अखबार, टेलीविजन, रेड़ियों में सवथी उपयोगिता के लिये काम आ सकती हैं ।

७. यह शोध कार्य विद्यार्थीयों के लिये सर्वथा उपयुक्त रहेगी ।

XI प्रमुख निष्कर्ष (Conclusion) :— जनसंचार के शिक्षा के परिपेक्ष्य में दृश्य श्रव्य माध्यम द्वारा छात्राओ व छात्रों में मानसिक, आर्थिक सामाजिक परिणाम का यह संबंध शोध कर्ता ने लिया । तथा इन माध्यमों का इस्तेमाल द्वारा नई नई तकनीकी जैसे उदाहरण के तौर पर इंटरने, कम्प्युटर, ई—कॉर्मस, एज्युकाम, टी.व्ही., ओ.एच.पी., एल.सी.डी. इन संचार माध्यमों द्वारा अधिक प्रभावशाली तरीके से अध्ययन पूर्ण करने मे सहायक सामग्री होती हैं । इत्यादी

- जनसंचार माध्यम के साधन शिक्षा के परिपेक्ष्य में इस्तेमाल करने पर इन साधनों को (दृश्य श्राव्य साधन) द्वारा अल्प या मंद बुध्दी वाले छात्रों का बौध्दिक क्षमता में प्रगती हुई ।

- जनसंचार माध्यम के साधनों की नई नई तकनीकी प्रयुक्त करने पर इन (दृश्य श्राव्य साधन) द्वारा विद्यार्थी दुगनी उत्साह द्वारा अध्ययन रत रहता हैं ।

- जनसंचार माध्यम के नई नई साधनों की अध्ययन की प्रक्रिमें इन साधनों द्वारा (दृश्य श्राव्य साधन) में शिक्षक एक कुशल मार्गदर्शक मित्र सलाहकार के रूप में प्रयुक्त करता है ।

- जनसंचार माध्यम का ८५% सकारात्मक प्रेरणादायिक प्रभाव देखने को मिलता हैं । जब हम इन साधनों की इस्तेमाल करते हैं ।

- जनसंचार के (दृश्य श्राव्य माध्यम) से कठिन विषय जैसे विज्ञान, गणित के सकल्पनाये सही मार्गदर्शन देते हैं ।

- इन संचार माध्यम द्वारा छात्रों में सृजनशीलता व स्वअध्ययन के गुण छात्रों में दिखाई पड़ते हैं ।

- ज्ञान में बुध्दी इन साधनों द्वारा दिखाई पड़ती हैं । व तत्य रूचीकर व दृश्यवान होने पर छात्रों की अभिरूची शत प्रतिशत बनी रहती हैं ।

- कठिन विषय, संज्ञा, संबोध संकल्पनायें आसानी से हल होती हैं ।

- जनसंचार साधनों के प्रयुक्त होने पर अंत तक छात्रों की सची बनी रहती हैं ।

- इन साधनो के प्रयुक्त होने पर मूल्य मापन अत्यधिक सरल ढंग से सुनियोजिता रिजल्ट प्रस्तुत करता हैं ।

X संदर्भ ग्रंथ सूची (References / Bibliography) :— प्रस्तुत शोध के कार्य के लिये शोधकर्ता ने १३ किताबे हिन्दी की जनसंचार और पत्रकारिता के बदलते स्वरूप में शिक्षा के परिपेक्ष्य में चयनित किया गया । तथा १० (Review) के लिये पत्रिका I.S.B.N. तथा I.S.S.N. संबंधित ग्रंथ व पत्रिका लिया गया जो निम्न प्रकार से लिखित हैं ।

१. ‘‘शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी’’ — डॉ.एस्.एस्.माथूर

२. शैक्षिक तकनिकी — १. शैलेन्द्र भूषण

२. डॉ. अनिल कुमार वाएर्णेय

३. पत्रकारिता, मिड़िया एवं जनसंचार — रीना गुलाटी एम.जे.एम.गोल्ड, मैडलिस्ट पंजाब युर्निवसिर्टी

४. सांख्यिकी पध्दती — प्रो. राम देशमुख

५. शोध प्रस्तुती — लेखिका उमा पाण्डेय

६. शिक्षा अंनुसन्धान — डॉ.आर ए. शर्मा

७. जनसंचार एवं पत्रिका और पत्रकारिता — डॉ.(कुमारी) सुषमा चतुर्वेदी

८. इलैक्ट्रानिक मिडिया — चेतना भाटिया

९. प्रिंट और इलैक्ट्रानिक मिड़िया — पी.के.आर्य

१०. जनसंचार का समाज शास्त्र — लक्ष्मींद्र चौपड़ा

११. जनसंचार कल आज और कल — १. चंद्रकांत सरदाना

२. कृ.शि.मेहता

१२. शिक्षण संवेदना पत्रिका — डॉ. माधव राव गवई

१३. अग्रवाल जे.सी.एज्यूकेशनल ऑफ एज्युकेशन, टेक्नालॉजी टीचिंग लरनिंग दिल्ली, विकास १९९५